209sk22

22

पत्र-लेखनम्

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे अपने भावों, विचारों के आदान-प्रदान की आवश्यकता होती है। इसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता। जो समीप होते हैं उनसे हम वार्तालाप द्वारा अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। हमारे सभी आत्मीय सर्वदा हमारे समीप ही वर्तमान नहीं रहते हैं। अतः दूर स्थित स्वकीय लोगों के साथ विचार विनिमय का जो सर्वसुलभ साधन है, वह है 'पत्र'। आज जबकि दूर संचार टेलीफोन, मोबाइल, इंटरनेट (ईमेल) तथा फेसबुक एवं आरकुट जैसी सोशल नैटवर्किंग साइट्स आदि ने यद्यपि स्थान की दूरियों को कम कर दिया है, तब भी पत्रों का महत्त्व कम नहीं हुआ है। ये पत्र-व्यवहार हमारे मित्रों, कार्यालयों अथवा संस्थाओं आदि के साथ भी हो सकता है। कुशलवार्ता निवेदन, अनुराग प्रकट करना, धनादि की अभ्यर्थना, सूचना प्रदान करना, प्रशंसा करना तथा व्यवहार का आदान-प्रदान करना इस प्रकार असंख्य व्यवहार पत्र द्वारा किये जाते हैं। हमारे जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जब हमारे भावों की अभिव्यक्ति हमेशा एक जैसी नहीं होती और हम व्यक्ति एवं अवसर के अनुरूप अपनी भावनाओं को अलग-अलग शब्दों में व्यक्त करते हैं।

चित्र 22.1: अपने आत्मीय जन को पत्र लिखते हुए बालक

टिप्पणी

प्रस्तुत पाठ में आप सीखेंगे कि किस अवसर पर किस व्यक्ति को किस प्रकार के भावों और संदेशों से युक्त पत्र संस्कृत भाषा में भेजे जा सकते हैं। यहाँ हम इस तरह के सभी पत्रों की चर्चा करेंगे।

उद्देश्यानि

पाठं पठित्वा भवान्/भवती

- विभिन्नपत्रप्रारूपेषु भेदं करिष्यति;
- विविधसंबंधान् अधिकृत्य सम्बोधनस्य समुचितं प्रयोगं करिष्यति;
- यथावसरं पत्राणां कृते विषय-वस्तुचयनं करिष्यति;
- यथानिर्देशं पत्रसङ्केतं लेखिष्यति;
- निर्देशानुसारं पत्राणि लेखिष्यति;

22.1 इदानीं मूलपाठं पठाम:

पत्रप्रारूपम्

चित्र 22.2: पत्र लिखते हुए

यद्यपि सभी पत्र एक-दूसरे से अलग होते हुए भी प्रारूप/लेखन के प्रकार में कुछ समानताएं व विभिन्नताएँ लिए रहते हैं, इन्हें जान लेने पर पत्र लेखन में पर्याप्त सरलता और एकरूपता आ जाती है। इसलिए पहले इनके सामान्य प्रारूप पर विचार किया जा रहा है। पत्र प्रारूप के विभिन्न अंग होते हैं-

(क) पत्रलेखकस्य पत्रसङ्केत:, तिथि:।

(ख) संबोधनम् अभिवादनं, कुशलवचांसि च।

टिप्पणी

(ग) विषयवस्तु

(घ) समाप्तौ वाक्यांशविशेषः

(ङ) संबंधसूचकशब्दाः नाम च

(च) पत्रसङ्केतः (पत्रस्वीकर्तुः पत्रप्रेषयितुः च)

(क) पत्र संकेतः तिथिश्च-

पत्र-लेखन के समय पत्र के ऊपर दाँई ओर आप अपने घर का पता, उसके नीचे नगर का नाम, प्रदेश का नाम तथा उसके नीचे उस दिन की तिथि लिखेंगे। जैसे-

(i)

बी- 3/76
विद्यारण्यपुरम्
दिल्लीतः
12.10.2011

(ii)

परीक्षाभवनतः/परीक्षाभवनात्
12.10.2010

ऊपर पता एवं तिथि लिखने के दो उदाहरण दिये गये हैं। ध्यान से देखें कि संस्कृत में नगर (दिल्ली) के नाम के साथ ''तः'' जोड़ा गया है। तः का प्रयोग पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में होता है। पञ्चमी का अथवा उसके स्थान पर 'तः' का प्रयोग अलग होने की अवधि को अर्थात् जहाँ से अलग हुआ जाता है उसे बताता है। पत्र लिखते समय

स्थान के साथ 'तः' का प्रयोग यह दर्शाता है कि पत्र उस निर्दिष्ट स्थान से लिखा गया है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि परीक्षा केन्द्र में 'घर का पता' तथा 'नगर का नाम' न लिखकर केवल 'परीक्षाभवनात्' या 'परीक्षाभवनतः' लिखा जाता है। ऐसा इसलिए कि परीक्षक से आपका नगर तथा घर का पता गोपनीय रहे अथवा आप यथानिर्देश पत्र संकेत लिख सकते हैं।

(ख) संबोधनं अभिवादनं आशीर्वचांसि/कुशलवचांसि वा।

पत्र का प्रारम्भ संबोधन पद से किया जाता है। यह पत्र के बाँई तरफ लिखा जाता है। हम जिसे पत्र लिख रहे हैं अर्थात् पत्रस्वीकर्ता उसके अनुसार पत्र में संबोधन पदों में भी परिवर्तन हो जाता है। यह भिन्नता आयु, स्थान, मैत्री पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग आदि के आधार पर होती है।

(ख) संबोधनम्

(i) मित्रेभ्यः

प्रिय सुहृद्! प्रियबन्धो! (पुल्लिँङ्गे)

प्रिय सखे! प्रियबन्धुवर! (पुल्लिँङ्गे)

प्रिये शालिनि! प्रिये सुखदे! प्रियसखि! प्रियवयस्ये (स्त्रीलिङ्गे)

टिप्पणी

(ii) अनुजेभ्यः अनुजाभ्यः सम्बोधनम्

पुल्लिंगे	स्त्रीलिंगे
प्रिय अनुज, प्रिय भ्रातः	प्रिये अनुजे!, सम्बोधनम् प्रिये भगिनि पुत्र्याःकृते- प्रिये आत्मजे!

(iii) अग्रजेभ्यः गुरुजनेभ्यः च
मान्याः/पूज्या/महोदयाः/श्रद्धेयाः गुरुचरणाः
प्रातः स्मरणीयाः गुरुवर्याः

(iv) मातापित्रोः कृते सम्बोधनम्
पूज्ये/मान्ये मातः!,
मान्याःपितरः! (आदरार्थे बहुवचनम्)

(ग) अभिवादनम् आशीर्वचनम् च

(i) सस्नेहं नमो नमः, (ii) नमामि, (iii) नमस्ते, (iv) सप्रेम नमः,

(v) सस्नेहं प्रणामाः, (vi) सस्नेहं प्रणामाञ्जलयः

(vii) कल्याणमस्तु (viii) शुभाशिषः (ix) आयुष्मान् भव (पुल्लिंगे)

(x) आयुष्मती भव (स्त्रीलिङ्गे) (xi) दीर्घायुष्यं कामये।

पूज्यानां मातपितृ-गुरुणां कृते।

(xii) चरणकमलेषु प्रणमामि (xiii) चरणयुगले नमस्करोमि/प्रणमामि

कुशलवचांसि/कुशलनिवेदनम्

अहं कुशली (पुँल्लिङ्गे)
अहं कुशलिनी (स्त्रीलिङ्गे)
सर्वं कुशलम्/ सर्वं कुशलं खलु?

अत्र वयं सर्वे कुशलिनः, तत्र सर्वं कुशलं खलु?

मान्यानां मातृपितृगुरूणां कृते

भवतः आशीर्वादेन अहं कुशली (पु.)/कुशलिनी (स्त्री.) अस्मि।

भवन्तः सर्वे कुशलिनः इति भावयामि/विश्वसिमि/चिन्तयामि

(घ) विषयवस्तु

अभिवादन के पश्चात् पत्र के बाईं ओर से विषय-वस्तु आरंभ की जाती है। विषयवस्तु वही

टिप्पणी

संदेश है, जो हम पत्र पढ़ने वाले तक पहुँचाना चाहते हैं।

वर्तमान में सभी भाषाओं में पत्रों की विषय-वस्तु औपचारिकताओं से रहित, सार्थक, समय के अनुरूप, अत्यंत संक्षिप्त रूप में होती है। उसी प्रथा को संस्कृत पत्रों में भी अपनाया जा सकता है। इसलिए संस्कृत में भी पत्रों की विषय-वस्तु अवसर के अनुरूप सार्थक और संक्षिप्त होनी चाहिए, जो एक या दो पङ्क्तियों के गद्य अथवा किसी श्लोक के रूप में हो सकती है।

प्राचीन प्रथा के अनुसार पत्र की समाप्ति पर वाक्यांश विशेष, जैसे शिवमन्यत्, कुशलमन्यत् आदि को वर्तमान में पत्रों में स्थान नहीं दिया जाता।

(ङ) अन्ते वाक्यानि द्वित्राणि-

नान्य: विशेष:/अन्य:कोऽपि विशेष: नास्ति/

मम नमस्कारान् मातरं/पितरं/...../सर्वान् निवेदयतु/

ज्येष्ठेभ्य: सर्वेभ्य: प्रणामा:/नमस्कारा:/कनिष्ठेभ्य: आशीर्वाद:/

बालाय/बालिकायै आशिष:/आशीर्वादा:/

शीघ्रम्/अविलम्बेन/पत्र-प्राप्त्यनन्तरमेव उत्तरं लिखतु/ यदा तदा पत्रं लिखतु/

उत्तरलेखनं न विस्मरतु/

अविस्मृत्य पत्रं लिखतु खलु भवान्/भवती

शिष्टं पत्रान्तरे/अग्रे

शिष्टं भवदुत्तरप्राप्त्यन्तरम्।

प्रत्युत्तरं प्रतीक्षमाण: (पुं.) प्रतीक्षमाणा (स्त्री) विरमामि।

आरम्भवाक्यानि द्वित्राणि

भवत: पत्रं प्राप्तम्/न प्राप्तम्

भवत: पत्रम् अद्य एव ह्य:/परह्य:/प्रपरह्य:/त्रिचतुर्भ्य: दिनेभ्य:

पूर्व/गतसप्ताहे/गतमासे/सद्य: एव प्राप्तम्/पत्रस्य आशय:/अभिप्राय: ज्ञात:/अवगत:/विदित:/

पत्रं पठित्वा अहं सन्तुष्ट:/वयं सर्वे सन्तुष्टा:/बहुकालत: भवत: पत्रम् एव न प्राप्तम्/

कारणं किमिति न जानामि।

उत्तरलेखने विलम्ब: जात:।

क्षम्यताम्/क्षमां याचे/क्षमां प्रार्थये/क्षन्तव्य: अहम्।

(च) संबंधसूचकशब्द तथा नाम

टिप्पणी

पत्र समाप्ति के बाद अंत में दाईं ओर पत्र भेजने वाले के द्वारा अपने संबंध के अनुसार उचित शब्दावली प्रयुक्त की जाती है।

जैसे (i)	पित्रे-	भवताम् आज्ञाकारी पुत्रः (पुं.)/पुत्री (स्त्री)
		भवताम् आत्मजः(पुं.)/आत्मजा (स्त्री)
(ii)	मित्राय-	भवताम् सुहृद्
		भवतः-सखा
		भवताम् अभिन्नमित्रम्
		भवताम् अभिन्नहृदयः/अभिन्नहृदया (स्त्री.)
(iii)	गुरुभ्यः	भवद्-आशीर्वादाभिलाषी(पु.)/ भवद्-आशीर्वादाभिलाषिणी (स्त्री)
		प्रियःशिष्यः(पु.)/प्रियशिष्या(स्त्री)
(iv)	पत्ये/भार्यायाःकृते वा-	भवदभिन्नः(पु.)/भवदभिन्ना
		भवत्याःप्राणप्रियः(पु.)/भवतःप्राणप्रिया (स्त्री)
(v)	अन्येषां कृते-	भवदीयः(पु.)/भवदीया (स्त्री)
		भवदीयं विश्वासपात्रम्

बोधप्रश्नाः

1. अधोलिखितेषु एक एव पत्रलेखकस्य सङ्केतः शुद्धः (√) इति चिह्नेन सूचयत-

क. 02.02.2011
बी.3, कमलानगरम्
दिल्ली

ख. हरिद्वारात्
गुरुकुलमहाविद्यालयः

ग. 77 सी-2
मोतियाबाग रेलवे कालोनी
दिल्लीतः
12.10.2011

घ. कानपुरतः
15.06.2011

2. रिक्तस्थानानि पूरयत-

क) गुरवे लिखिते पत्रे ..... इति सम्बोधनं भविष्यति।

ख) ..... अन्ते भवतामात्मजः इति संबंधसूचकः शब्दः भविष्यति।

टिप्पणी

ग) मित्राय लिखिते पत्रे ..... इति सम्बोधनपदम् उचितम्।

घ) अनुजं भ्रातरम् प्रति ..... इत्थं सम्बोधनं सम्यक्।

ङ) वन्दनीयाः पितृपादाः इति सम्बोधनम् ..... अस्ति।

3. 'क' स्तम्भे सम्बोधनपदम् दत्तम् 'ख' स्तम्भे च अभिवादनम्/आशीर्वचनम् दत्तम्। कस्मै किमभिवादनम्/आशीर्वचनं समुचितम् इति मेलनं कुरुत।

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
क) प्रिये सखि अमृते!,	1) प्रणामाञ्जलयः।
ख) श्रद्धेयाः गुरुवर्याः!,	2) सस्नेहम् आशीः।
ग) वन्दनीये अम्ब!,	3) सस्नेहं नमः।
घ) प्रिय वत्स सुधीर!,	4) चरणारविन्देषु नौमि।
ङ) अतिप्रिय अनुज हेमन्त!,	5) शुभाशिषः।

4. भवान् शिक्षकः सञ्जातः। अस्मिन् वर्षे 'शिक्षकदिवसे' शिक्षकस्य स्वरूपचिन्तनं कृत्वा निजगुरुं प्रति निम्नलिखित -संकेत-बिन्दून् आधारीकृत्य संस्कृतभाषया संक्षिप्तं-पत्रं लिखत-

संकेतबिन्दवः

सम्बोधनम् एवम् अभिवादनम्

सन्देशवाक्यम्

.....

स्थानं तिथिश्च

.....

संबंधसूचकः शब्दः। नाम

.....

5. अधोलिखितसंकेतैः पत्रं पूरयत।

लेखकः जवाहरलालनेहरूः।, स्वपुत्रीं इन्दिरां प्रति जन्मदिवसे पत्रम्।

दिनांकः- 19.11.1930 स्थानम् 'नैनी' कारागारः प्रयागः

स्थानं तिथिश्च

.....

संकेतबिन्दवः

सम्बोधनम् एवम् आशीर्वाचनम्

.....

आशीर्वचनम्.....

टिप्पणी

सम्बन्धसूचकः शब्दः

.....

22.2 अधुना पाठम् अवगच्छामः

22.2.1 विशिष्टावसरेषु लेखनीयानि विविधपत्राणि

(i) जन्मदिवसोपलक्ष्ये मित्राय पत्रम्

246 सी बी-4 केशवपुरम्
दिल्लीतः
26.12.2010

प्रिय मित्र सत्य!,

सस्नेहं नमः।

जन्मदिवसस्यावसरे तव सौख्याय, दीर्घायुष्याय, स्वस्थजीवनाय, च ईश्वरं प्रार्थये। मम हार्दिकशुभकामनाः वर्धापनानि च स्वीकुरु।

तव अभिन्नहृदयः
प्रदीप कुमारः

(ii) नववर्षस्यागमे सखीम् प्रति शुभकामनाः

217 बी सरोजनीनगरम्
नवदिल्लीतः
28.12.2010

प्रिय सखि दीपा,

सप्रेम नमस्ते।

नवसंवत्सरोऽयं तव जीवने प्रतिदिनं सौख्यं, सफलतां, समृद्धिम्, नवतां च पूरयेत्। गृहे समेषां परिवारजनानां कृतेऽपि नववर्षस्य हार्दिकशुभकामनाः।

तव सखी
टीना

(iii) गुरुं प्रति पठनार्थम् अनुमतये

बी-3/76
पुष्पविहारम्
नवदिल्लीतः
11.7.11

टिप्पणी

श्रद्धेया गुरुचरणाः

सादरं प्रणामाञ्जलयः।

ईश्वरानुग्रहेण मम स्वास्थ्यं सम्यक् अस्ति। भवताम् आशीर्वादेन परीक्षायामपि सम्यक् लिखितवान् अस्मि। इतः विरामं प्राप्य भवतां पार्श्वे आगमिष्यामि। विरामसमये (सिद्धान्तकौमुदीम्) पाठयन्तु इति प्रार्थयामि।

भवतां पत्रं प्रतीक्षमाणः

भवतां विनेयः

श्रीशः

(iv) दूरदर्शनं प्रति/आकाशवाणीं प्रति पत्रम्

336, सरस्वतीपुरम्
दिल्लीतः
10.7.11

माननीयाः निर्देशकमहोदयाः

दूरदर्शनम्/आकाशवाणी

नवदेहली

मान्याः,

सादरं नमः

गत सोमवासरे (04.07.11) रात्रौ नववादने (9.00) प्रसारितं संस्कृतनाटकं बहु उत्तमम् आसीत्। प्रतिसप्ताहम् एतादृशाः कार्यक्रमाः पुनः पुनः प्रसारिताः भवन्तु इति प्रार्थयामि।

धन्यवादाः

इति संस्कृतानुरागी

रामनारायणः

(v) ''दीपमालिकायाः अवसरे ज्येष्ठभगिन्यै पत्रम्

बी 525 रोहिणी

दिल्लीतः

10.10.2010

आदरणीये भगिनि राधिके!

सादरं नमः।

टिप्पणी

प्रकाशस्यायम् उत्सवः युष्माकं सर्वेषां जीवने सुखं, समृद्धिं, आरोग्यं च पूरयेत् इति मे कामनाः।

भवत्याः अनुजा

श्रुतिः

(vi) ''परीक्षायाम् प्रथमस्थानोपलब्धये भ्रात्रे पत्रम्।

ए-1, कृष्णनगरम्

शाहदरा दिल्लीतः

04.05.2011

प्रिय अनुज अशोक!,

शुभाशिषः।

मैट्रिकपरीक्षायां प्रथमस्थानं प्राप्य सफलतायै मम पक्षतः तव भ्रातृजायायाः पक्षतः च भूयोभूयः वर्धापनानि आशीर्वादाः च। अग्रेऽपि भवान् अहर्निशं सततपरिश्रमेण एवमेव सफलतायाः सोपानमारोहेत् इति मम कामना विश्वासश्च।

तव भ्राता

विजयः।

पाठगतप्रश्नाः 22.1

1. अधोलिखिततां तालिकां पूरयत-

यं प्रति लिखामः	सम्बोधनम्	अभिवादनम्/आशीर्वचनम् वा
(i) अम्बां प्रति	.....	सादरं चरणवन्दनानि
(ii)	प्रिय अनुज	चिरञ्जीवी भव
(iii) सखीं प्रति	.....	.....
(iv) गुरुं प्रति	परमपूज्यगुरुवर्याः	.....

2. 'क' स्तम्भे विशिष्टप्रयोजनानि दत्तानि।

'ख' स्तम्भे शुभाशंसाः लिखिताः। तयोः परस्परं मेलनं कुरुत

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(i) होलिकोत्सवे	(क) शुभाः सन्तु ते पन्थानः

टिप्पणी

(ii) नववर्षस्य प्रारम्भः (ख) ईश्वरः भवन्तं सर्वदा निरामयं करोतु।

(iii) विदेशयात्रायै प्रस्थानम् (ग) दीपज्योतिः भवतां जीवनं प्रकाशमयं करोतु।

(iv) रोगादनन्तरं स्वास्थ्यलाभः (घ) सर्वाणि दुःखानि होलिकायां दग्धानि स्युः। शुभाः कामनाः।

(v) दीपावली (ङ) दीर्घजीवी, यशस्वी, ओजस्वी, तेजस्वी च भूयाः।

(vi) जन्मदिवसः (च) नूतनवर्षः मंगलमयः भवेत्।

3. पत्रलेखकस्य परिचयात्मकः शब्दः पूरणीयः।

(i) गुरुं प्रति भवताम् .....

(ii) पितरं भवदीयः .....

(iii) अम्बां प्रति भवदीया .....

(iv) मित्रं प्रति भवतः .....

(v) अनुजं प्रति भवतः .....

(vi) अग्रजं प्रति भवताम् .....

4. अधोलिखिते पत्रे रिक्तस्थानपूर्तिं करोतु। सहायतार्थं मञ्जूषा दत्ता।

111, सी 4, जनकपुरी
नई दिल्ली
....._1_.....

प्रिय बन्धो

....._2_.....

प्रातः अहम् स्वदैनन्दिन्यां दृष्टवान् यत् ....._3_..... जन्मदिवसः अस्ति। अस्माकं ....._4_..... मत्पक्षतः च एतदर्थम् अनेकाः ....._5_.....। ईश्वरः भवन्तं दीर्घजीवनम् ....._6_..... च करोतु।

सर्वेभ्यः मम प्रणामाः

....._(7)_..... प्रियः सखा

....._(8)_.....

पत्रसङ्केतः

टिप्पणी

श्री ज्ञानेश्वर मिश्रः

कक्षसंख्या 15, ...9.....

सम्पूर्णानन्दः संस्कृत विश्वविद्यालयः

वाराणसी, ...10.....

221 002

मञ्जूषा

उत्तरप्रदेशः, भवतः, परिवारपक्षतः, यशस्विनम्, छात्रावासः, 22.6.11, तव, शुभाशंसाः, सोमेशः, सस्नेहं नमोनमः

किमधिगतम्?

- पत्रलेखने पूर्वं पत्रलेखकस्य निवास-सङ्केतः उपरि दक्षिणतः लेखनीयः।
- निवाससंकेतानन्तरं तदधः तिथिः लेखनीया।
- यं प्रति पत्रं लिख्यते तं संबोध्य संबोधनवचनानि लेख्यानि।
- यथा सम्बन्धम् आशीर्वचनानि, अभिवादनवचनानि लेखनीयानि।
- पत्रस्य विषय-वस्तु लेखनीयम्।
- अन्ते उपसंहारः लेखनीयः।
- प्रेषकस्य परिचयः लेखनीयः
- पत्रप्रेषकस्य नाम लेखनीयम्
- पत्रस्वीकर्तुः यथाक्रमम् पत्रसङ्केतः लेखनीयः

योग्यताविस्तारः

विशिष्टावसरेषु प्रयोज्यानि पद्यात्मकानि वचनानि

1. जन्मदिनम्

स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु
विद्या-विवेक-कृतिकौशल-सिद्धिरस्तु।
ऐश्वर्यमस्तु बलमस्तु सदा जयोऽस्तु
वंशः सदैव भवतां हि सुदीपितोऽस्तु।।

टिप्पणी

2. विवाहः

संतुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।। (मनु.-3-90)

3. गृहप्रवेशः

सदा शुभ्रं श्रितं सद्भिः शुभलाभसमन्वितम्।
सदाचाराश्रयं कान्तं भूयाद्धि भवतां गृहम्।।
गृहे देयं स्वागतं च हार्दिकी मधुरा च वाक्।
स्नेहाश्रयौ प्रेरणा च नोच्छिद्यन्तां कदाचन।।

4. नववर्षम्

नववर्षं नवं हर्षं समृद्धिं सुखसम्पदम्।
कार्यसिद्धिपरां वृद्धिं वितनोतु शुभं चिरम्।।

5. रक्षाबंधनम्

रक्षासूत्रं रक्षतु सर्वान् कलयतु भ्रातुर्भावम्।
भेदमनैक्यं दूरीकुर्वज्जनयतु जनसौहार्दम्।।

6. दीपावली

दीपाग्निशुद्धाश्च भवन्तु लोकाः
चित्तेन वाचाऽपि च कर्मणाऽपि।
शुद्धं प्रबुद्धं समुपैति लक्ष्मीः
दीपावली साधयते समृद्धीः।।

दीपावली दीपितसर्वलोका देदीप्यमाना हृदये जनानाम्।
स्नेहं परेषां हितसाधनं च संवर्धयन्ती शुभमातनोतु।।

पाठान्तप्रश्न

1. भवतां मित्रस्य जन्मदिवसः वर्तते। तदर्थं शुभकामनासंदेशं प्रेषयन् एक पत्रं लिखतु।

टिप्पणी

उत्तराणि

बोधप्रश्नाः

1. घ
2. (क) श्रद्धेयाः गुरुचरणाः (ख) पित्रे लिखितस्य पत्रस्य (ग) प्रिय सुहृत् (घ) प्रिय (नाम) (ङ) पित्रे
3. क + 3, ख + 4, ग + 1, घ + 5, ङ + 2
4.

15, छात्रावासः

संस्कृतविद्यालयः

जयपुरतः

22.6.03

श्रद्धेयाः गुरुवर्याः

सादरं प्रणमामि

अद्य शिक्षकदिवसे अहं शिक्षकः भूत्वा पाठितवान्। अस्मिन् पवित्रदिने भवताम् आशीर्वादं कामये। भवतां कृपाछाया सर्वदा मम उपरि भवेत्।

भवदीयः शिष्यः

क.ख.ग.

5.

नैनी कारागारः

प्रयागतः

19.11.1930

प्रिये पुत्रि

चिरञ्जीविनी भव!

अद्य भवत्याः जन्मदिवसः। अहं कारागारतः किमपि वस्तु प्रेषयितुं न शक्नोमि परन्तु अहं भारतस्य सम्पूर्णम् इतिहासं लिखित्वा तव बोधाय पत्रमाध्यमेन प्रेषयामि। एषः एव मे उपहारः। स्वीकुरु। ईश्वरः त्वां दीर्घजीविनीं कुर्यात्।

तव पिता

जवाहरलालः

टिप्पणी

पाठगतप्रश्नाः 22.1

1. (i) पूज्ये मातः
   (ii) अनुजं प्रति
   (iii) प्रिय सखि, सस्नेहं नमः
   (iv) सादरं प्रणामाञ्जलयः
2. (i) + घ, (ii) + च, (iii) + क, (iv) + ख, (v) + ग, (vi) + ङ,
3. (i) प्रियशिष्यः/आज्ञाकारी शिष्यः
   (ii) प्रियः पुत्रः
   (iii) प्रिया पुत्री
   (iv) प्रियः सुहृत्
   (v) अग्रजः
   (vi) अनुजः
4. (1) 22.06.03, (2) नमो नमः, (3) तव, (4) परिवारपक्षतः, (5) शुभाशंसाः, (6) यशस्विनं, (7) भवतः, (8) सोमेशः, (9) छात्रावासः, (10) उत्तरप्रदेशः

पाठान्तप्रश्नाः

1.

246 सी बी-4 केशवपुरम्

दिल्लीतः

26.12.2010

प्रिय मित्र सत्य!,

सस्नेहं नमः।

जन्मदिवसस्यावसरे तव सौख्याय, दीर्घायुष्याय, स्वस्थजीवनाय, च ईश्वरं प्रार्थये। मम हार्दिकशुभकामनाः वर्धापनानि च स्वीकुरु।

तव अभिन्नहृदयः

प्रदीप कुमारः